[Total No. of Questions:05]

Total No. of Pages: 04

1924

8003

M.A. (Previous) - Examination 2026
HINDI
Paper-Third
(Pracheen Kavya)
(प्राचीन काव्य)

Duration of Examination: 3 Hours
परीक्षा की अवधि: 3 घण्टा

Max. Marks: 100
पूर्णांक: 100

1924

Instructions to the Candidates:
परीक्षार्थी के लिए निर्देश:-

नोट:- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की अधिकतम सीमा 500 शब्द है। सभी प्रश्नों के अंक प्रश्न के सम्मुख अंकित है।

1924

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 9

क. कामदेव अवतार हुअ, सुअ सोमेसर नन्द।
सहस-किरन झलहल कमल, रति समीप वर बिंद ।।
सुनत स्रवन प्रथिराज जस, उमंग बाल विधि अंग।
तन-मन चित चहुँआन पर, बस्यौ सु-रत्तह रंग।।
बैस बिती ससिता, आगम कियो बसंत।
मात-पिता चिन्ता भई, सोधि जुगति कौ कंत।।

अथवा

उहै घरी पलीन उहै दिनावेर उहै सीज।
सकल सूर सामंत, लिए सब दौलि बंव बीज।।
अरू कवि चंद अनूप, रूप सरसै बर कह बहु।
और सैन सब पच्छ, सहस्त सेना तिय सष्षुह।।
चामंडराय दिल्ली धरह, गढ़पति करि गढ़ भार दिय।
अलगार राज प्रथिराज तब, पूरब दिस तब गमन किय।।

ख. नव पौरी पर दसवँ दुआरा । तेहिं पर बाज राज- घरियारा। 9
धरि सौ बैठि गनै घरियारी। पहर-पहर सों आपनि बारी।।

जबहीं घरी पूजि तेइँ मारा। घरी-घरी घरियार पुकारा।।

परा जो डाँड जगत सब डाँडा। का निचिंत मारी के भांडा।।

तुम्ह तेहि चाक चढ़ै सो काँचे। आएहु रहै न थिर होइ बाँचे।।

घरी जो भरी घटी तुम्ह आऊ। का निचिंत होइ सोउ बटाऊँ?।।

पहर निति होई। हिया बजर, मन जागन सोई।।

मुहमद जीवन-जल भरन, रहँट-घरी कैरीति।

घरी जो आई ज्यों भरी, ठरी, जनम गाबिति।।

1924

अथवा

रोइ गँवाएउ बारह मासा। सहस-सहस दुख एक-एक साँसा।।

तिल-तिल बारिस बरिस बारू जाई। पहर पहन जुग जुग न सिराई।।

सो न आउ पिउ रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सो नारी।।

साँझ भए झुरी-झुरी पथ हेरा। कौन सो धरी करें पिउ फेरा।।

दहि कोइल भैं कंत सनेहा। तोला मात्रस रहा नहिं देहा ।।

रकत न रहा बिरह तन गरा। रती-रती होई नैनन्हि ढरा।।

पाव लागिचेरी धनि हा हा। चूरा नेह जोरू रे नाहा।।

बारिस देवस धनि रोइ कै हारि परी चित झाँखि।

मानुस हार पर पूँछि कै पूँछि निसरी पाँखि।।

1924

ग. माला पहरै मनमुषी, ताथै कछू न होइ। 9

मन माला कौं फेरताँ, जग उजियारा सोई।।

कबीर माला काठ की, कहि समझावै तोहि।

मन न फिरावै आपणाँ, कहा फिरावै मोहि।।

माला पहरयाँ कुछ नहीं, रूल्य मूवा इहि भारि।

बाहरि ढोल्या हींगलू, भीतर भरी भंगारि।

अथवा

हरि जननीं मैं बालिक तेरा,

काहे न औगुण बकसहु मेरा।

सुत अपराध करै दिन केते, जननी कै चित रहैं न तेते।।

कर गहि केस करै जौ घाता, तऊ न हेत उतारै माता।।

कहै कबीर एक बुधि बिचारी, बालक दुखी दुखी महतारी।।

घ. बड़ सुख-सार पाओल तुअ तीरे। 9

छोड़इत निकट नयन वह नीरे।।

कर जोरि विनमओ बिमल तरंगे।

पुन दरसन होइ पुनमति गंगे।

एक अपराध छेमब मोर जागी।

परसल माय पाए तुअ पानी।।

कि करब जप-तप जोग धेआने।

जनम कृतार्थ एकहि सनाने।।

भनइ विद्यापति समदओ तोही।

अन्तकाल जनु बिररह मोही।।

1924

अथवा

कामिनी कोने गढ़ली।

रूप सरूप मोयँ कहइत असंभव लोचन लागि रहली।।

गुरू नितंब भरे चलए न पारए माझ खानि बीन निभाई।

भांगि जाइत मनसिज धरि राखति त्रिबलि-लता अरूझाई।।

भनई विद्यापति अद्‌भुत कौतुक ई सब बचन सरूपे।

1924

रूपनरायन ई कस जानथि सिवसिंह मिथिला भूपे।।

प्र.2 ''हिन्दी में चन्द को छन्दों का राजा कहा जा सकता है।'' इस कथन के आलेक में 'पृथ्वी राज -रासो' के छन्द विधान पर प्रकाश डालिए। 16

अथवा

''पृथ्वीराज रासो' आदिकाल की रासो काव्य-परम्परा का शीर्षस्थ काव्य है।'' सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

प्र.3 'पद्मावत श्रृंगार-रस प्रधान काव्य है।' स्पष्ट कीजिए। 16

1924

अथवा

'जायसी ने 'पद्मावत' में प्रकृति का सुन्दर निरूपण किया है।' इस कथन के आधार पर जायसी के प्रकृति चित्रण की विवेचना कीजिए।

प्र.4 कबीर के रहस्यवाद पर निबन्ध लिखिए। 16

अथवा

''कबीर तो मानव प्रेमी और मानवतावादी महापुरूष थे।'' इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

प्र.5 'विद्यापति पदावली' के काव्य वैशिष्ट्य की सोदाहरण विवेचना कीजिए। 16

1924

अथवा

''विद्यापति के विरह-वर्णन में भाव और कल्पना का तथा अनुभूति और तन्मयता का अद्भुत सामंजस्य है।'' सप्रमाण सिद्ध कीजिए।